गुलाम मोहम्मद शेख़

प्रिंट-मेकिंग के ७० सालों पर एक नज़र

भाग एक: हाथ से बने प्रिंट

वुडकट, लिनोकट, एचिंग-एक्वाटिंट, लिथोग्राफ़ी, सिल्कस्क्रीन

चित्रकार, कवि, कला इतिहासकार और शिक्षक बतौर विख्यात गुलाममोहम्मद शेख़ की प्रिंट के प्रति गहरी दिलचस्पी के बारे में लोग कम ही जानते हैं। दो भागों की इस प्रदर्शनी में १९५० के दशक से आज तक के उनके प्रिंट के कामों पर एक नज़र डाली गई है।

पहले भाग की परिकल्पना एक लेखागार या आर्काइव की तरह की गई है। इसमें शेख़ द्वारा हाथ से बनाए गए प्रिंटों की पड़ताल की गई है जिसमें लघु पत्रिकाओं में प्रिंट के साथ उनके प्रयोग और कला व विचारों के लोकतांत्रिकरण के लिए सहभागी ढंग से काम करने में उनकी दिलचस्पी शामिल हैं। १९५० के दशक के शुरुआती सालों में सुरेन्द्र नगर में अपने हाईस्कूल के दिनों में उन्होंने हाथ से लिखी जाने वाली एक साहित्यिक पत्रिका *प्रगति* के लिए चित्र बनाए व लिखा भी। पत्रिका की एकमात्र प्रति स्थानीय लाइब्रेरी की मेज़ पर सबके लिए रखी जाती थी। इसमें उनके बाद के जीवन की दिलचस्पियों की भी झलक देखने को मिलती है जब उन्होंने बड़ौदा में कला के विद्यार्थी बतौर प्रिंट बनाना सीखा और गुजराती साहित्यिक दायरों में भी सक्रिय हुए। उन्होंने अपने साथी कलाकारों के मौलिक लिनोकट से अवाँ गार्द साहित्यिक पत्रिका *क्षितिज* की चित्र सज्जा की और साथ में मुक्त छंद में कविताएँ भी लिखी।

प्रिंट बनाने के उनके काम ने १९६० के दशक के अन्तिम वर्षों में एक आत्मकथात्मक रुख़ ले लिया जब उन्होंने अपने संस्मरण भी मुक्त गद्य की तरह लिखना शुरू किया। दिल्ली स्थित अमेरिकन सेंटर में १९७० में आयोजित पॉल लिंग्रेन की एक महत्वपूर्ण प्रिंट-मेकिंग कार्यशाला में शेख़ शामिल हुए। वहाँ उन्होंने एक्वाटिंट बनाना सीखा। वहीं से प्रिंट में उनकी संजीदा दिलचस्पी की शुरुआत हुई और उन्होंने अपना एचिंग प्रेस भी ख़रीद लिया। कलाकारों के बीच संवाद शुरू करने के उद्देश्य से बड़ौदा में कला इतिहास पढ़ाने के दौरान ही उन्होंने भूपेन खखर के साथ मिलकर *वृश्चिक* नाम की एक लघु पत्रिका की शुरुआत भी की। पत्रिका के हर अंक की ५०० प्रतियाँ छपती थीं और उसके कवर और अन्दर के पन्नों पर लिनोकट और लीथोग्राफ़ हुआ करते थे। प्रिंट-मेकिंग में लोगों की दिलचस्पी बढ़ाने और एचिंग, ड्राई पॉइंट, लिनोकट, वुडकट व मोनो-प्रिंट की सुविधाएँ जन-सुलभ कराने के लिए शेख़ ने १९९० के दशक के बाद के सालों में कविता शाह और विजय बागोडी के साथ मिलकर छाप फ़ाउंडेशन की शुरुआत की।

बतौर प्रिंटमेकर शेख़ ने शुरुआत आधुनिक शैली के साथ की मगर समय के साथ, साहित्य और कला इतिहास में अपनी गहरी दिलचस्पी की वजह से वे किस्सागोई की तरफ़ झुक गए। जल्द ही, भारत में डिजिटल प्रिंट-मेकिंग की शुरुआत होने के बाद शेख़ इस तकनीक का संजीदगी से इस्तेमाल करने वाले लोगों में भी शुमार हो गए। इस बारे में और तफ़तीश से पड़ताल इस प्रदर्शनी के दूसरे भाग में की गई है।

पुष्पमाला एन

गुलाम मोहम्मद शेख़

प्रिंट-मेकिंग के ७० सालों पर एक नज़र

भाग दो: माइंड प्रिंट

डिजिटल काम: *मप्पा मुंडी*

बड़ौदा की आर्टअंडरग्राउंड गैलेरी द्वारा २००१ में आयोजित न्यू मीडिया आर्ट वर्कशॉप में शेख़ ने डिजिटल प्रिंट बनाना शुरू किया। उस कार्यशाला में कलाकारों को कम्प्यूटर और फैसिलिटेटर (सहजकर्ता) मुहैया कराए गए थे। नई-नई शैलियों को लेकर हमेशा जिज्ञासु रहने वाले शेख़ इस माध्यम के प्रति भी आकर्षित हुए जो चित्रकारी और प्रिंट-मेकिंग की 'धीमी' प्रक्रियाओं की तुलना में 'तेज़' था।

वे इस माध्यम के 'क्षणिक' और 'ठोस' आयामों के प्रति आकर्षित हुए: एक तरफ़ स्क्रीन पर चमकती हुई छवि और दूसरी तरफ़ प्रिंट लेने पर उसमें आने वाले भौतिक बदलाव के बीच का तनाव। वे इनको *माइंड प्रिंट* कहते हैं क्योंकि उनके लिए कम्प्यूटर 'हाथों की जगह दिमाग़ [माइंड] को रख देता है, और दिमाग़ तस्वीरों को खोजने, उनको कम्पोज़ करने और बनाने में मुख्य भूमिका में होता है'। जहाँ *हैंड प्रिंट्स* ने लघु पत्रिकाओं में मौलिक ग्राफ़िक प्रिंट शामिल करके किसी कलाकृति की कई प्रतियाँ बनाने के विचार को ही एक फैलाव दे दिया, *माइंड प्रिंट* में शेख़ अपने कलात्मक उद्देश्यों को मशीन के ज़रिए हासिल करने के लिए लगातार नए तरीक़े खोजते रहते हैं। इसके लिए वे कारीगरी के तत्व इसमें जोड़ते हैं। मिसाल के लिए, डिजिटल प्रिंटों को ख़ास बनाने के लिए उनपर हाथ से चित्रकारी करना। मुम्बई हवाई अड्डे के लिए बनाए गए विशाल डिजिटल प्रिंट म्यूरल में उन्होंने गतिशील तत्वों का इस्तेमाल किया है। आज की तारीख़ में उनके कलात्मक उपकरणों में एक आधुनिक डिजिटल वर्कस्टेशन भी शामिल है।

उसी दौर में, गुजरात में २००२ के साम्प्रदायिक दंगों के दौरान, उनको व उनके परिवार को धमकियाँ मिलीं जिसके चलते उन्हें कुछ समय के लिए बड़ौदा से बाहर जाना पड़ा। लेकिन देश के प्रमुख बुद्धिजीवियों में से एक होने के नाते शेख़ ने ख़ुद का अलगाव नहीं होने दिया। वे मज़बूती के साथ केन्द्र में खड़े हैं, दुनिया के विविध खूबसूरत रंगों को अपनाए हुए। उनकी डिजिटल कलाकृतियाँ चमकीले रंगों और अलग-अलग जगहों व कालों से लिए गए उद्धरणों से सराबोर रहती हैं। बड़ौदा में कला के युवा विद्यार्थी बतौर वे गुजराती बुद्धिजीवियों के प्रभाव में भी आए। मिसाल के लिए, मार्क्सवाद से गांधीवाद की तरफ़ मुड़े भोगीलाल गाँधी जैसे बुद्धीजीवी, जो *विश्वमानव* नाम की पत्रिका निकालते थे। शेख़ इस पत्रिका के लिए लिखा भी करते थे। ज़मीन से गहरे जुड़े मगर किसी सीमा में नहीं बँधने वाले सार्वभौमिक मनुष्य का गांधीवादी आदर्श *मप्पा मुंडी* की छवि में विस्तार पाता है। यह दुनिया का एक मध्य युगीन नक़्शा है जिसके ज़रिए शेख़ नए-नए संसार रचते हैं, जहाँ कबीर, मजनूँ, मेरी मैगडेलेन; सन्त, फ़रिश्ते और दानव; कवि और चित्रकार; कला इतिहास और मिथकों से जुड़ी हस्तियाँ; बाहरी और बाग़ी शख़्सियतें इश्क़ और चाहत में डूबे हुए एक साथ आते हैं, एक गहरी आध्यात्मिकता की तलाश में।

पुष्पमाला एन